विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

''ध्वज तिरंगा देश की शान, हर हिंदुस्तानी का अभिमान, अचानक क्यों आया दिव्य ज्ञान, कि पुनः चलाओ नया अभियान''

सात समुद्र पर, दूर-दराज बर्मिंघम में भारत माँ के ग्रामीण, आदिवासी, गरीब माँ-बाप के बेटे-बेटियों नें, राष्ट्र मंडल खेलों में मेडल्स जीत-जीत कर, बेमिसाल उपलब्धियों के साथ गर्व से तिरंगा फहराया। न शोरगुल, न रैलियां और न कर्कश दिखावटी नारे।

हजारों-लाखों विद्यार्थी, हर 15 अगस्त, 26 जनवरी को अपने-अपने सँस्थानों में बिना पोलिटिकल पार्टियों के आव्हान-यात्राओं, के प्यारे तिरंगे ध्वज को दिल की गहराइयों सलाम करते हैं।

तिरंगा देशवाशियों के लिए सदैव प्रिय, सम्माननीय रहा है और हमेशा रहेगा। देश के वीर सैनिकों को यह प्राणों से प्रिय है। देश के किसानों, मजदूरों, दस्तकारों, सामान्य नागरिकों नें हमेशा इसे अपने दिल से सम्मान दिया है।

देश के नागरिक बिना दिखावटी अभियानों के, प्राणों की आहुति देकर इसका सम्मान करते आए है और सदैव करेंगे।

तिरंगा हमारे देश की आजादी की लडाई का उत्प्रेरक रहा है। इस संघर्ष के बलिदानों का, आन्दोलनों का साक्षी रहा है। उस समय तो इसका सम्मान बढ़ाने के लिए, इसको पकड कर चलने वाले बलिदानी शूरवीरों को किसी प्रकार की यात्राए निकाल कर इसका गौरव बढ़ाने की आवश्यकता नहीं पडी। आज अचानक अलग-अलग रंगों के राजनीतिक दलों को ऐसा करने की आवश्यकता क्यों कर पड गई? क्या जनता उनकी निष्ठाओं पर शंका कर रही है??? यह तेरा-मेरा तिरंगा क्यों, तिरंगा हम सब का तिरंगा है??

राजनीतिक दलों का यह दिखाने का कि कौन सी पार्टी कितनी लोकप्रिय-देश भक्त है, निरर्थक कम्पीटिसन है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में बहसें चलाई जा रहीं है कि कब कब किस-किस ने तिरंगे का मान-अपमान-स्वीकार-अस्वीकार किया। यह तो इतिहास की बातें हुई। राजनीतिक दल अब क्यों इन बातों को सिद्ध-असिद्ध करने में इतनी शक्ति लगा रहे है? कोई डर सता रहा है क्या??

देश के कुछ बडे राजनीतिक दलों में विभिन्न प्रकार से दिखावटी नारे लगा कर तिरंगे ध्वज के माध्यम से देश प्रेम, देश भक्ति दिखाने की होड सी लगी है। अधिक से अधिक झण्डे घर-घर लगवा कर अपनी देश भक्ति का नाप बता रहे हैं। उनकी देश भक्ति पर किसने शंका की है, किसने चुनौती दी है? किसी नें नहीं।

देश के नागरिकों को तो कभी भी अपना देश प्रेम प्रदर्शित करने के लिए इस प्रकार के दिखावटी अभियानों की आवश्यकता पडी नहीं। राजनीतिक दलों का यह दिखाने का कि कौन सी पार्टी कितनी लोकप्रिय-देश भक्त है, निरर्थक कम्पीटिसन है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में बहसें चलाई जा रहीं है कि कब कब किस-किस ने तिरंगे का मान-अपमान-स्वीकार-अस्वीकार किया। यह तो इतिहास की बातें हुई। राजनीतिक दल अब क्यों इन बातों को सिद्ध-असिद्ध करने में इतनी शक्ति लगा रहे है? कोई डर सता रहा है क्या??

किसी नगरिक को कोई आपत्ति नही बल्कि स्वागत करते हैं कि पार्टियां नि:शुल्क या सशुल्क झंडे वितरित करें, अधिक से अधिक घरों में लगवाएं। खतरा तो केवल यह है कि इसे समाज को बांटने और देश भक्ति नापने का, नया पैमाना तो नहीं बनाया जा रहा है? आशा करे कि इस पैमाने पर देश में कूट-कूट कर देश भक्ति भरने का अभियान न चल पडे।

क्या झंडा लगाने मात्र से नागरिक को देश भक्ति का प्रमाण पत्र मिल जाएगा---क्या मोब लिंचर्स, दंगा भडकाने और उसमें भाग लेने वाले तिरंगा लपेट लें तो देश भक्त बन जाएंगे? खाद्य पदार्थों, दवाओं में मिलावट करने वाले, गगन चुम्बी तिरंगा फहरा लेंगे तो देश भक्त होने का प्रमाण पत्र मिल जाएंगे? क्या भ्रष्टाचार करने वाले, माफियाओं को संरक्षण देने वाले, जातीय व लैंगिक आधार पर भेदभाव-अत्याचार करने वाले, समाज में नफरत-आतंक फैलाने वाले तिरंगा फहराते ही देश भक्त हो जाएंगे? इस प्रकार के लोग अंधाधुन्द झंडे भी बांटेंगे और अपने घरों और वहनों पर बडे से बडे झंडे भी लगाएंगे, देश भक्ति का प्रमाण पत्र जो लेना है??

क्या सामान्य नागरिक जो हर प्रकार से देश के संविधान, कानून को मानते हुए, काम कर के, रोजगार सृजित कर, देश की उन्नति में सहायक होकर अपना योगदान करता है वो झंडा फहराने वालों से कम देश भक्त होगा??

चलते चलते, यह कि सोशल मीडिया पर चल रहा है--कहीं कहीं तो गरीबों को राशन लेने के लिए झंडा खरीदना पड रहा है, कुछ सरकारी महकमों में कर्मचारियों को 20 रु का झंडा 30 रु में दिया जा रहा है--पोलिटिकल पार्टियों के कुछ दफ्तरों में 30रु से सस्ते में झंडा मिल रहा है–बताया जा रहा है कि पार्टियों ने तो लाखों-करोडों झंडे खरीदे है, मुफ्त देने के लिए--हो सकता है, हमारी लोकप्रिय देश भक्त पार्टियां के दूर दर्ज के कुछ दफ्तरों नें गफलत में पैसे लेकर तिरंगे झंडे बेच दिए होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

थेवा कला का उद्गम सत्रहवीं शताब्दी में हुआ प्रतापगढ़ में सामंतसिंह के शासनकाल में

पन्नालाल मेघवाल

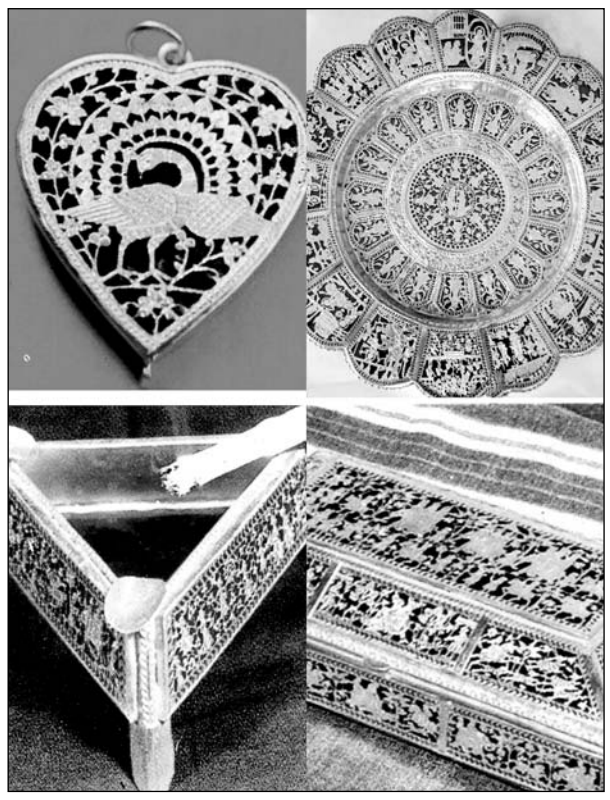

सत्रहवीं शताब्दी में थेवा कला का उद्गम प्रतापगढ के शासक सामंतसिंह के शासनकाल में हुआ। प्रतापगढ में थेवा कला के प्रथम शिल्पी स्वर्गीय नाथूलाल सोनी थे। उन्होंने सामंतसिंह को अपनी कलाकृतियां दिखाई तो वे प्रसन्न हुए। उन्होंने नाथूलाल सोनी की थेवा कला को प्रश्रय दिया। उन्होंने नाथूलाल सोनी को राजसोनी परिवार की उपाधि प्रदान की।

प्रतापगढ राज्य के राजा-महाराजाओं ने कलाकारों को प्रतापगढ में बसाने हेतु चार सौ बीघा जमीन बक्शीश में दी। फलस्वरूप यह राजसोनी परिवार उत्तरोत्तर प्रगति करते रहे, फलते-फूलते रहे और आज विश्व के प्रमुख संग्रहालयों तथा राज महलों में इस कला की कला कृतियाँ सुशोभित हो रही हैं। इधर राजा महाराजाओं ने अपने विदेशी मेहमानों को थेवा-कला की उत्कृष्ट कलात्मक वस्तुएं उपहार में देकर खुश करने में कोई कसर नहीं रखी। परिणाम स्वरूप विदेशी लोगों ने भी इस कला की कलात्मक कला कृतियां अपने यहां मंगवाने में कीर्तिमान स्थापित किया। प्रतापगढ़ की थेवा कला को देश-विदेश में ख्याति मिली। यही कारण है कि इस कला का नाम एनसाइक्लोपीडिया आफ ब्रिटेनिका में भी अंकित है।

थेवा कला कांच पर सोने का सूक्ष्म चित्रांकन है। कांच पर सोने की यह कारीगरी अत्यन्त बारीक, कमनीय एवं कलात्मक होती है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम ग्लास (कांच) का प्रयोग किया जाता है। चित्रकारी का ज्ञान इसके लिए आवश्यक होता है। सर्वप्रथम सोने की बारीक शीट पर सूक्ष्म चित्रांकन नई नक्काशी के साथ किया जाता है। इस कला का कलाकार चित्रकला के पश्चात् अनवरत अभ्यास एवं सतत साधना से कांच पर बारीक कला की नक्काशी तथा रेखांकन को प्रकल्पित कर चित्रांकन का रूप साकार करता है।

थेवा कला में लगभग चार इंच लम्बी एवं तीन इंच चौडी स्वर्ण शीट को पीट-पीट कर मनचाहा विस्तार दिया जाता है। बार-बार स्वर्ण शीट को पीटते रहने की प्रक्रिया को स्थानीय भाषा में थेरना कहा जाता है तथा शीट पर विभिन्न आकृति उकेरने के लिए उपयोगी चांदी के रिंग की फ्रेम को वादा कहते है। इस प्रकार स्थानीय भाषा में उच्चारित थेरना के थे एवं वादा के वा से मिलकर थेवा शब्द बना। मूलत: जहां सोने की शीट के बिना थेवा कला शून्य है वहीं सोने की शीट पर काँच को निश्चित आकृति में बनाये रखने के लिए चाँदी के रिंग के स्वरूप के बिना थेवा-कला की कल्पना निर्मूल है।

काँच पर स्वर्ण के विस्मयकारी शिल्पांकन से निर्मित थेवा कला में एक छोटी सी अगूंठी से लेकर बडी मजूंषा तक बनाई जाती है। गले का हार, पेण्डल इयरिंग, पाजेब, बिछुए, सिगरेट, बाक्स, इत्रदान, पानदान, टाईपिन, कफ के बटन, कलात्मक तश्तरियां, श्रृंगारदान एवं तस्वीरें तक बनाई जाती है। भाव मग्न मोर की आकृतियाँ, रासलीला एवं शिकार के दृश्य, फूल पत्ती आदि का कलात्मक चित्रांकन इस कला की उत्कृष्टता प्रतिपादित करते हैं।

थेवा कला से अंलकृत आभूषणों का मूल्य धातु न होकर कलाकार की कला का होता है। इस कला में सोना कम एवं साधना अधिक होती है। यही कारण है कि वे आभूषण मंहगे होने के बावजूद लोगों द्वारा व्यापक पैमाने पर बनवाये जाते हैं। कई परिवार केवल थेवा कला के आभूषण खरीदने मात्र के लिए ही प्रतापगढ पहुँचते है। स्थानीय एवं विदेशी ग्राहकों के अग्रिम आदेश हर समय रहते हैं ।

भारत सरकार ने भी थेवा कला की मनभावन कलाकृतियों की कलात्मकता को समझा तथा समय-समय पर इस कला के पारंगत एवं महारत प्राप्त राजसोनी परिवार के सदस्यों को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया। सन् 1969 में रामप्रसाद सोनी, सन् 1970 में शंकरलाल राजसोनी, सन् 1972 में वेणीराम राजसोनी, सन् 1975 में रामविलास राजसोनी, सन् 1977 में जगदीशप्रसाद राजसोनी, सन् 1980 में बसन्तराज राजसोनी एवं सन् 1982 में रामनिवास राजसोनी कलाविद राष्ट्रपति अंलकरण पुरस्कार से सम्मानित किये गये। इसके अलावा बाद के वर्षों में 7 कैलाशचन्द्र राजसोनी, महेशकुमार राजसोनी, लक्ष्मीनारायण राजसोनी एवं निर्मलकुमार राजसोनी को भी राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार ने भी इन कलाकारों को समय-समय पर सम्मानित किया है।

■ **विश्व प्रसिद्ध होने के बावजूद यह कला एक राजसोनी परिवार तक ही सीमित है**

आश्चर्य की बात यह है कि थेवा कला भारत ही नहीं बल्कि विश्व प्रसिद्ध होने के बावजूद केवल प्रतापगढ़ के एक राजसोनी परिवार तक ही सीमित है। पीढियों से इस राजसोनी परिवार में काँच पर सोना जड़ने का यह कार्य होता आ रहा है लेकिन सात-आठ परिवारों को छोड़कर कोई भी नहीं जानता है कि स्वर्ण शिल्पकारी किस तरह की जाती है। इस कला को अति गोपनीय रखा जाता है। केवल इस परिवार के पुत्रों को यह कला सीखाई जाती है। पुत्रियों यहां तक कि पत्नियों को भी इस कला से परिचित नहीं कराने की परम्परा है।

आज के औद्योगिक एवं मशीनी युग में मेहनत भरे सूक्ष्म एवं साँस्कृतिक स्वर्ण चित्रांकन के इस थेवा कला कार्य को राजसोनी परिवार की नई पीढी भी सीख रही है। यह इस क्षेत्र की ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं विश्व के लिए गौरव की बात है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार

151 मीटर तिरंगे के साथ तीन हजार बच्चों ने निकाली रैली

श्रीमाधोपुर, (निसं)। ग्राम मूंडरू के राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय में इंडियन रेडक्रॉस सोसायटी व ग्राम पंचायत के तत्वावधान में तिरंगा रैली का आयोजन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमाधोपुर एसडीएम दिलीप सिंह राठौड़ थे। अध्यक्षता सरपंच सुमित्रा देवी ने की।

■ **एसडीएम दिलीप सिंह राठौड़ ने दिखाई हरी झंडी**

सोसायटी के ब्लॉक संयोजक शंकर लाल शर्मा ने बताया कि कस्बे के राजकीय व निजी विद्यालयों के 3 हजार बच्चों ने रैली में भाग लिया। 151 मीटर लंबे तिरंगा ध्वज के साथ कस्बे के मुख्य बाजारों से रैली निकाली। एसडीएम राठौड ने आजादी के अमृत महोत्सव के बारे में जानकारी दी तथा हरीझंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। ग्रामीणों व विभिन्न सामाजिक संगठनों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर तिरंगा रैली का स्वागत किया। सरपंच सुमित्रा देवी ने बच्चों को फल वितरित किये। पीईईओ भेरूराम यादव, प्रधानाचार्य राजेन्द्र, रामलाल वर्मा, यादव, एड रामजीलाल मिश्रा, उपसरपंच दिलीप सिंह, डॉक्टर मंगल लक्ष्मीनारायण सैनी, रणवीर सिंह सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

श्रीमाधोपुर में इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी ग्राम पंचायत के तत्वावधान में तिरंगा रैली का आयोजन किया गया।

श्रीगंगानगर की जलवायु में अंजीर का उत्पादन संभव: डॉ. सिंह

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिले के पन्नीवाला जाटान गांव के रहने वाले 12वीं पास किसान गोपाल सिहाग 10 साल से मूंग, ग्वार और सरसों जैसी ट्रेडिशनल खेती कर रहे थे। कमाई भी कुछ खास नहीं थी। दो साल पहले एक दोस्त के खेत में गए । वहां अंजीर की खेती के बारे में पता चला। दोस्त ने बताया इससे 5 गुना तक मुनाफा कमाया जा सकता है। गोपाल सिहाग ने तय किया अंजीर की खेती करेंगे। एग्रीकल्चर एक्सपर्ट से बात कर तरीका सीखा, लेकिन सबसे बड़ी चिंता इस बात की थी कि इसे बेचेंगे कैसे? इस सवाल का जवाब मिला सोशल मीडिया से। गोपाल ने बताया कि एक बार वह सोशल मीडिया पर वीडियो देख रहे थे। एक वीडियो में कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग के बारे में बताया जा रहा था। पता चला कई कंपनी खेत से सीधे फ्रूट खरीदती है। गोपाल कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग के जरिए पहली बार में 4 लाख से ज्यादा का मुनाफा कमा चुके हैं। उन्हें उम्मीद है कि इस बार दूसरी क्रॉप से वे 22 लाख रुपए तक का प्रॉफिट कमाएंगे।

अंजीर की खेती दूसरे फ्रूट की खेती से थोड़ी महंगी है। लेबर, ऑर्गेनिक खाद, स्प्रिंकलर सिस्टम, ड्रिप इरिगेशन आदि का खर्चा ज्यादा होता है। ऐसे में एक पौधे पर करीब 300 रुपए का मेंटेनेंस आता है लेकिन, प्रोडक्शन बढ़ने के साथ आय भी बढ़ती जाती है। उपनिदेशक कृषि विस्तार डॉ.मिलिंद सिंह ने बताया कि श्रीगंगानगर की जलवायु में अंजीर का प्रोडक्शन संभव है।

■ **किसान ने मूंग छोड़ अंजीर की खेती शुरू की, कंपनी खुद आती है खरीदने**

अंजीर के फल 45 से 50 दिन में पककर तैयार हो जाते हैं। ऐसे में किसान को भी कोई नुकसान नहीं होता। उनका कहना है कि प्रोसेसिंग यूनिट लग जाए तो यह किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती है। गोपाल सिहाग ने बताया कि कॉन्ट्रैक्ट फॉर्मिंग के जरिए यहां के किसानों को बड़ी राहत मिली है। फल पकने के बाद कंपनी का व्हीकल खेतों से ही फ्रूट कलेक्ट करता है। वे इसे ले जाकर फाइनल प्रोडक्ट तैयार करते हैं। इसके लिए कंपनी के प्लांट में ड्रायर में फ्रूटस को सुखाकर हल्का प्रेस किया जाता है, इसके बाद पैकिंग की जाती है। गोपाल सिहाग के पास 28 बीघा जमीन है। 6 बीघा में अंजीर के पेड़ लगाए हैं।

राशिफल शनिवार 13 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 11:28 तक, शोभन योग प्रात: 7:49 तक, तैतिल करण दिन 2:20 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

त्रिपुष्कर योग रात्रि 11:28 से रात्रि 12:54 तक है। आज अश्वत्थ मारूती पूजन, अशून्य शयन व्रत, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:39 से 9:16 तक, चर 12:32 से 2:09 तक, लाभ-अमृत 2:09 से 5:15 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:01, सूर्यास्त 7:02

मेष
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे।

तुला
नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक बनी रहेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

चूरू के नगर परिषद क्षेत्र में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से चौपट

विपक्ष भी नगरपरिषद पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने के अलावा कुछ नहीं कर रहा

चूरू, (कासं)। नगर परिषद क्षेत्र चूरू में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गई है। शहर की मुख्य सड़कों पर लगे गंदगी के ढेर सबके सामने नगर परिषद की पोल खोल रहे हैं। सच में तो लगता है कि यहां नगरपरिषद और जिला प्रशासन ने मिलकर चूरू को गंदे शहरों की सूची में पहले नम्बर पर लाने हेतु अभियान चला रखा है।

धर्म स्तूप से गढ़ की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर नटराज होटल के सामने, बाबोसा मंदिर व खेमका शक्ति मंदिर की गली के किनारे, जैन श्वेतांबर स्कूल के पास सहित कई जगह गंदगी के ढेर देखे जा सकते हैं। इस मार्ग पर आधा दर्जन से अधिक बैंक भी हैं। इनके अलावा मंदिर, स्कूल, जिला पुस्तकालय, अस्पताल आदि भी हैं।

चर्चा है कि बाबोसा मंदिर व खेमका शक्ति मंदिर की गली के पास कांग्रेस नेता मंडेलिया का चुनावी कार्यालय होने के कारण नगर परिषद द्वारा जानबूझकर गंदगी का ढेर लगाया जा रहा है। ताकि रोजाना हजारों लोग कांग्रेस नेता मंडेलिया के चुनावी कार्यालय के आगे भारी मात्रा में गंदगी देखकर थू-थू कर सकें।

लोगों ने दर्जनों बार शिकायत कर दी, उसके बाद भी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। दूषित राजनीति के चलते शहर में नई सड़क पर भी कई जगह भारी मात्रा में कचरा एकत्रित रहता है। बहड़ सर्किल के पास, सर्किट हाऊस के मुख्य द्वार के आगे भी गंदगी के कारण दयनीय स्थिति बनी हुई है। शहर में दिनों दिन यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

नगर परिषद चुनाव में मंडेलिया ने जिन समस्याओं का समाधान करने का वादा किया वो और बढ़ गई हैं। मजे की बात देखो कांग्रेस के पार्षदों की भी कोई सुनवाई नहीं होती है। यहां विपक्ष भी नगरपरिषद पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने के अलावा कुछ नहीं कर रहा है।

चूरू, कांग्रेस नेता मंडेलिया के चुनावी कार्यालय के आगे भारी मात्रा में जमा गंदगी।